MAEC

स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र) उपाधि
(MAEC)

सत्रीय कार्य 2024
सेमेस्टर II
(जनवरी 2024 सत्र हेतु)
(उन छात्रों के लिए जिन्होंने जुलाई 2023 और जनवरी 2024 में पहली बार प्रवेश लिया है)

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

एम.ए. (अर्थशास्त्र)
'सत्रीय कार्य 2024

प्रिय विद्यार्थी,

जैसा कि एमएईसी के लिए कार्यक्रम दर्शिका में वर्णित है, पाठ्यक्रम में सत्रीय कार्यों की अधिभारिता 30ः है और पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए आपको सत्रीय कार्यों में न्यूनतम 40ः अंको की प्राप्ति अवश्य करनी होगी। ध्यान दें, सत्रीय कार्यों को जमा किये बिना आप सत्रांत परीक्षा नहीं दे सकते हैं। सत्रीय कार्य पूरे करने से पहले, कृपया आप अलग से भेजी गई कार्यक्रम दर्शिका में प्रदत्त निर्देशों को पढ़ लें। प्रत्येक पाठ्यक्रम में अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य (टीएमए) शामिल हैं। आपको प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए अलग से सत्रीय कार्य तैयार करके इन्हें जमा कराना है। सुनिश्चित करें कि आपने उन सभी पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य निर्धारित समय में जमा किए हैं, जिनकी सत्रांत परीक्षा देने की योजना आपने बनाई है।

सत्रीय कार्य करना आरंभ करने से पूर्व कार्यक्रम निदेशिका के निर्देशों को ध्यानपूर्वक समझ लें। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि आप अपने शिक्षक मूल्यांकित सत्रीय कार्यों के प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दें। आपके उत्तर बताई गई शब्द सीमा में ही होने चाहिए। याद रखें कि इन प्रश्नों के उत्तर लिखने से आपकी लेखन कला में सुधार होगा और आपकी परीक्षा हेतु तैयारी भी होगी।

आपको सत्रांत परीक्षा में शामिल होने का पात्र बनने के लिए कार्यक्रम निदेशिका में बताई गई समय सीमाओं में ही अपने सत्रीय कार्य जमा कराने होंगे। ये सत्रीय कार्य अपने अध्ययन केंद्र के संयोजक के पास निम्नलिखित समय सीमा के अंदर जमा करा देने चाहिए।

1) 30 अप्रैल 2024 तक उन विद्यार्थियों के लिए जो जून 2024 सत्रांत परीक्षा देने के इच्छुक हैं।
2) 31 अक्टूबर 2024 तक उन विद्यार्थियों के लिए जो दिसम्बर 2024 सत्रांत परीक्षा देने के इच्छुक हैं।

आपको अध्ययन केंद्र से सत्रीय कार्य जमा करने की रसीद मिलेगी। उसे संभाल कर रखें। संभव हो तो अपने सत्रीय कार्य की एक फोटो प्रतिलिपि भी अपने पास रखें। अध्ययन केंद्र मूल्यांकन के बाद आपके सत्रीय कार्य आपको लौटाएगा। अध्ययन केंद्र द्वारा आपको मिले अंक मूल्यांकन प्रभाग, इग्नू नई दिल्ली को भेजे जाएंगे।

हम आशा करते हैं कि आप सत्रीय कार्य मे ंदिए गए निर्देशों के अनुसार प्रत्येक श्रेणी के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखेगें। सत्रीय कार्यों के उत्तर लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें:

1) योजना : सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। सत्रीय कार्य के प्रश्न जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें ध्यान से पढ़िए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए उसके बारे में महत्वपूर्ण तथ्य नोट कर लें, और फिर उन्हें तार्किक क्रम में व्यवस्थित कर लें।

2) संगठन : अपने उत्तर की कच्ची रूपरेखा बनाने से पहले कुछ बेहतर तथ्यों का चुनाव और विश्लेषण कीजिए। उत्तर की प्रस्तावना और निष्कर्ष पर विशेष ध्यान दें। उत्तर लिखने से पूर्व यह सुनिशचित कर लें कि :

क) आपका उत्तर तर्कसंगत और सुसंगत है;

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों में स्पष्ट संबंध है; तथा

ग) उत्तर आपके भाव, शैली और प्रस्तुति के आधार पर सही है।

3) प्रस्तुतीकरण : जब आप अपने उत्तर से संतुष्ट हो जाएँ तो जमा कराने के लिए सत्रीय कार्यों के प्रश्नों के उत्तर की स्वच्छ प्रति तैयार करें। **उत्तर साफ–साफ और अपनी हस्तलिपि में लिखना अनिवार्य है।** यह अवश्य सुनिश्चित कर लें कि आपका उत्तर निर्धारित शब्द–सीमा के भीतर ही होना चाहिए।

शुभकामनाओं के साथ!

पाठ्यक्रम संयोजक

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

एमईसी–104 : वृद्धि तथा विकास का अर्थशास्त्र
(सत्रीय कार्य)

पाठ्यक्रम कोड : एमईसी–104
सत्रीय कार्य कोड : एमईसी–104/टीएमए/2023–24
अधिकतम अंकः 100

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। भाग–क में दिए गए प्रत्येक प्रश्न के 20 अंकों के हैं (प्रत्येक का उत्तर लगभग 500 शब्दों दें)। भाग–ख में दिए गए प्रत्येक प्रश्न 12 अंकों के हैं (प्रत्येक का उत्तर लगभग 300 शब्दों में दें)। संख्यात्मक प्रश्नों पर शब्द सीमा लागू नहीं होती।

(खण्ड क)

1) सेलो निदर्श में जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव की जाँच कीजिए। विकासशील देशों में सोलो निदर्श द्वारा गरीबी–जाल को समझाएँ एवं इसकी चर्चा भी करें।

2) समझाइए कि ए. के. (AK Model) निदर्श में पूंजी की घटती रिटर्न्स क्यों नहीं होती। अंतर्जात वृद्धि की 'लुकास निदर्श' की चर्चा कीजिए, मानव पूँजी की भूमिका स्पष्ट करते हुए।

(खण्ड ख)

3) आर्थिक वृद्धि तथा आर्थिक विकास में अतंर समझाइए। संक्षेप में बताइए कि आर्थिक वृद्धि समाज के लिये क्या लाभ प्रदान करती है?

4) पासिनेत्ति के आर्थिक वृद्धि एवं वितरण के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

5) कुल कारक उत्पादिता के मापन से संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों की व्याख्या कीजिए।

6) आय असमानता का आर्थिक वृद्धि पर क्या प्रभाव होता है इसकी चर्चा कीजिए।

7) भौगोलिक कारक किस प्रकार आर्थिक विकास को प्रभावित करते है, इसकी चर्चा कीजिए।

एम.ई.सी.–109 : अर्थशास्त्र में अनुसंधान विधियाँ
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम.ई.सी.–109
सत्रीय कार्य कोड : एम.ई.सी.-109/ए.एस.टी./2023-24
पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दें। खंड–क से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 700 शब्दों में देना है। इस खंड का प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है। खंड–ख से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में देना है। इस खंड से प्रत्येक प्रश्न 12 अंक का है।

खंड – क

1. ''आगमनात्मक कार्यनीति आँकड़ों के संकलन से प्रारंभ होती है जिनसे सामान्यीकरण किया जाता है''– इस कथन के आलोक में एक शोध प्रस्ताव तैयार करें जिसमें शोध प्रक्रिया में सम्मिलित विभिन्न कदमों का उल्लेख हो।

2. संगुच्छ प्रतिचयन तथा बहुस्तरीय प्रतिचयन में अंतर करें। किसी दिये गये जनपद में ग्रामीण परिवारों के बीच कुपोषण की स्थिति ज्ञात करने के लिए आप बहुस्तरीय प्रतिचयन विधि का प्रयोग कर किस प्रकार आँकड़े एकत्रित करेंगे? उदाहरण सहित समझाइये।

खंड – ख

3. मान लीजिए कि कुछ वर्षों के दौरान आप गतिशील वाहनों की बिक्री के व्यवहार का अध्ययन करना चाहते हैं। इस हेतु कोई व्यक्ति निम्नलिखित प्रतिमानों का सुझाव देता है–

$$Y_t = B_0 + B_1 t$$
$$Y_t = \grave{a}_0 + \grave{a}_1 t + \grave{a}_2 t^2$$

जहाँ कि $\mathbf{Y_t = t}$ समय पर वाहनों की बिक्री तथा t = समय। प्रथम मॉडल यह व्यक्त करता है कि वाहनों की बिक्री समय का रैखिक फलन है जबकि दूसरा मॉडल यह बताता है कि वाहनों की बिक्री समय का वर्गीय फलन है।

इन दोनों मॉडलों की विशेषताओं की चर्चा करें।

क) आप यह कैसे तय करेंगे कि इन दोनों मॉडलों में कौन-सा मॉडल अधिक उपयुक्त होगा?

ख) कौन-सी परिस्थिति में वर्गीय मॉडल अधिक उपयुक्त होगा?

4. गत बीस वर्षों के दौरान किसी वाहन वाली कम्पनी के वाहनों की बिक्री के आँकड़े एकत्रित करें और इस बात का परीक्षण करें कि कौन-सा मॉडल (रैखिक अथवा वर्गीय) उपयुक्त बैठता है?

5. प्रामाणिक सहसंबंध विश्लेषण क्या है? बहुचर प्रतीपगमन विश्लेषण तथा प्रामाणिक सहसंबंध विश्लेषण के बीच समानताएँ एवं अंतर बताएं।

6. क्रियात्मक शोध क्या है? परंपरागत शोध की तुलना में क्रियात्मक शोध की कार्यनीति के क्या लाभ होते हैं?

7. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखें :

   i) परंपरागत शोध तथा संरचनात्मक समीकरण प्रतिमान रचना

   ii) आदा-प्रदा (input-output) तालिका

   iii) समंकों का स्रजन (Data generation)

   iv) रूपावली (Paradigm)

एम.ई.सी.–205 : भारतीय आर्थिक नीति
सत्रीय कार्य
(टी.एम.ए.)

पाठ्यक्रम कोडः एम.ई.सी.–205
सत्रीय कार्य कोड : एम.ई.सी.-205/ए.एस.टी.(टी.एम.ए.)/2023-24
पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दें। खंड–क से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 700 शब्दों में देना है। इस खंड का प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है। खंड–ख से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में देना है। खंड–ख के प्रत्येक प्रश्न का मान 12 अंक का है।

खंड – क

1. ''अनेक कारणों से केंद्र तथा राज्यों के बीच संबंध का प्रश्न विचार-विमर्श का केंद्र बिंदु बन गया है''। इस कथन पर टिप्पणी करें। केंद्र तथा राज्यों के बीच विवाद के कारण बताएं।

2. ''भारतीय अर्थव्यवस्था में ढाँचागत परिवर्तन का प्रतिमान पश्चिमी एवं दक्षिणी एशिया की अर्थव्यवस्थाओं के विकास प्रतिमानों से विचलित हुआ है।'' इस कथन का परीक्षण करें।

खंड – ख

3. मौद्रिक नीति के क्या उद्देश्य रहे हैं? रिज़र्व बैंक द्वारा इन उद्देश्यों के पूर्ति हेतु किन संयंत्रों का प्रयोग किया जाता है? मुद्रा स्फीति को नियंत्रण करने में मौद्रिक नीति कहाँ तक सफल रही है?

4. सत्रहवीं सदी तक पूरे विश्वभर में सकल घरेलू उत्पादन (GDP) में भारत का सर्वाधिक योगदान रहा। इस आलोक में ब्रिटिश शासन के दौरान परंपरागत भारतीय अर्थव्यवस्था में विध्वंश के कारणों का लेखा-जोखा दें।

5. भारतीय अर्थव्यवस्था में मध्यम एवं लघु उपक्रमों (MSME) द्वारा किये जा रहे योगदान की चर्चा कीजिए। एमएसएमई क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने हेतु केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए नीतिगत उपायों का लेखा-जोखा दीजिए।

6. विश्व व्यापार की बदलती हुई प्रकृतिगत विशेषताओं को बताइये। 'Make in India' तथा 'Digital India' कार्यक्रम कहाँ तक विश्व व्यापार की बदलती हुई प्रकृति से सुसंगत हैं।

7. भारत में रोज़गार की गुणवत्ता में गिरावट के विविध आयामों को बताइये। महिलाओं की कार्यशक्ति सहभागिता दर में आई गिरावट के निहितार्थों को बताइये।